'नामर्दी की दवा' और ग्रामीण नारी का प्रतिरोध : स्वतंत्रता, दमन और मुक्ति का एक नारीवादी पाठ

- शहनाज़ सी एच

शोध सार

यह शोध पत्र गीताश्री की कहानी 'नामर्दी की दवा वाया लेडीस सर्कल' के सूक्ष्म विश्लेषण के माध्यम से ग्रामीण भारत में नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं, विशेषकर उनकी स्वतंत्रता, सामाजिक बंधनों, यौनिक अनुभवों और मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्वों की पड़ताल करता है। यह उन लोक परंपराओं और घरेलू परिदृश्यों का भी अन्वेषण करता है जहाँ महिलाएँ क्षणिक स्वाधीनता का अनुभव करती हैं, साथ ही उन अदृश्य बेड़ियों को भी उजागर करता है जो उनके अस्तित्व को परिभाषित करती हैं। यह शोध कथावाचक और भाभी के पात्रों के माध्यम से दो भिन्न नारीवादी अनुभवों - एक आधुनिक, शिक्षित और तलाकशुदा शहरी महिला बनाम एक पारंपरिक, ग्रामीण और पारिवारिक बंधनों में जकड़ी महिला - की तुलनात्मक पड़ताल करता है। यह नारी की यौनिक स्वायत्तता, अकेलेपन, और समाज में उसकी पहचान के संकट जैसे गहन मुद्दों पर प्रकाश डालता है, जो भारतीय ग्रामीण संदर्भ में अक्सर अनदेखे रह जाते हैं। यह कहानी लेखिका गीताश्री की सूक्ष्म दृष्टि और नारी मनोविज्ञान की गहरी समझ का प्रमाण है, जो सामाजिक यथार्थ को कलात्मकता से प्रस्तुत करती हैं।

परिचय:

भारतीय समाज में नारी की स्थिति सदियों से बहस का एक जटिल और बहुआयामी विषय रही है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, महिलाएँ अक्सर परंपराओं, सामाजिक मानदंडों और पितृसत्तात्मक संरचनाओं के गहरे जाल में फँसी रहती हैं। इसमें इस कहानी के पात्रों, घटनाओं और प्रतीकों का विश्लेषण कर ग्रामीण नारी के जीवन की जटिलताओं को उजागर करने का प्रयास किया है। यह कहानी ग्रामीण महिलाओं के उन क्षणों को चित्रित करती है जहाँ वे अपनी रोजमर्रा की बेड़ियों से मुक्त होकर सहजता और स्वतंत्रता का अनुभव करती हैं, साथ ही उन गहरी कुंठाओं और अनकही इच्छाओं को भी सामने लाती हैं जो उनके भीतर दबी रहती हैं। लेखिका गीताश्री ने इस कथा के माध्यम से भारतीय ग्रामीण परिवेश में महिलाओं की अलिखित नियति, उनकी अंतर्निहित शक्ति और दबे हुए प्रतिरोध को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित

किया है, जिससे उनकी लेखन शैली में यथार्थवाद और मनोवैज्ञानिक गहराई का अद्भुत सामंजस्य दिखाई देता है।

नारी स्वतंत्रता और सामाजिक बंधन: एक द्वंद्वात्मक विश्लेषण

ग्रामीण समाज में नारी की स्वतंत्रता एक मृगतृष्णा जैसी है। कहानी में यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि कैसे महिलाएँ अपने ही घर में 'पल्लू से आज़ादी' के लिए तरसती हैं। जब गाँव के सभी पुरुष बारात में चले जाते हैं, तब ही उन्हें वास्तविक अर्थों में मुक्त वातावरण मिलता है। "मर्द विहीन घर में बीती रात भर धूमगच्चर मचा था। रिश्ते के भतीजे की बारात विदा करने के बाद सारी औरतें घुटने तक साड़ी उठाकर आंगन में पसर गई है आंचल कहीं, पैर कहीं, सिर कहीं। बड़की भाभी अपने भारी वक्षों को खटिया में धंसा कर खिलखिला रही थी।"[1] यह दृश्य नारी की उस गहरी आवश्यकता को दर्शाता है जहाँ वह खुद को बिना किसी रोक-टोक के अभिव्यक्त कर सके। गीताश्री इस दृश्य को इतनी सजीवता से प्रस्तुत करती हैं कि पाठक ग्रामीण महिलाओं के इस दुर्लभ और बहुप्रतीक्षित क्षण की भावनात्मक गहराई को महसूस कर पाते हैं। यह उनकी अवलोकन क्षमता और सामाजिक बारीकियाँ पकड़ने की अद्भुत प्रतिभा को दर्शाता है।

यह केवल बाहरी आज़ादी नहीं, बल्कि आत्मिक स्वतंत्रता का प्रतीक है। अपने ही आँगन में पैर पसारकर बैठने के लिए भी उन्हें सौ बार सोचना पड़ता है, जो उनकी 'अस्वतंत्रता' का प्रारंभिक बिंदु है। कथावाचक का यह कथन, "सालों बाद इस तरह का विचित्र नज़ारा देख रही थी,"[2] इस बात को पुष्ट करता है कि यह स्थिति ग्रामीण महिलाओं के लिए कितनी असामान्य और दुर्लभ है। जो औरतें घर में खुलकर चल नहीं सकतीं, ज़ोर से बोल नहीं सकतीं, अपनी पसंद के कपड़े नहीं पहन सकतीं, उन्हें एक दिन के लिए ही सही, 'वह' बनने का मौका मिलता है - अपनी पहचान के सभी बंधनों से आज़ाद।

शादी के गीतों और परंपराओं में भी नारी पर नियंत्रण की गहरी छाप है। "दुल्हन धीरे-धीरे चलिए ससुर गलिया... दुल्हन सासु से बोलिअउ मधुर बोलिया..."[3] जैसे गीत बहू के लिए निर्धारित नियमों का स्पष्ट संकेत देते हैं। उसे कैसे चलना है, कैसे बात करनी है, ये सभी पहलू उसके जीवन भर के लिए तय कर दिए जाते हैं। यह केवल एक-दो दिन की बात नहीं, बल्कि पूरी ज़िंदगी का एक यथार्थ है जहाँ नारी को 'सामान्य' इंसान के बजाय एक नियंत्रित इकाई के

रूप में देखा जाता है। यह प्रश्न अनुत्तरित रह जाता है कि कब नारी को एक सामान्य व्यक्ति के रूप में देखने की प्रथा शुरू होगी। लेखिका गीताश्री इन पारंपरिक गीतों का उपयोग कर महिलाओं के जीवन पर थोपी गई अदृश्य बेड़ियों को सशक्त रूप से उजागर करती हैं। उनकी लेखन शैली में प्रतीकात्मकता और यथार्थवाद का यह मिश्रण कहानी को एक गहरी सामाजिक टिप्पणी में बदल देता है।

डोमकच का खेल: प्रतिरोध और अभिव्यक्ति का मंच

डोमकच जैसी लोक परंपराएँ ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रतिरोध और अभिव्यक्ति का एक अनूठा मंच प्रदान करती हैं। यह वह अवसर है जब वे पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को पलट देती हैं और 'पुरुष वेश' धारण कर उन पुरुषों को सताती हैं जो बारात में नहीं गए। "डोमकच का खेला देर रात तक चलता है। पूरे गांव टोले मोहल्ले में, पुरुष वेश या बहरूपिया बनी हुई औरतें; बाहर सोए हुए, जागे हुए मर्दों को सताती है। उनसे कुछ नेग वसूल कर ही जान छोड़ती है। इस स्वैग में बड़े, छोटे, बहू, सास, ससुर का लिहाज खत्म होता है।"[4]

यह खेल केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि एक सामाजिक व्यवस्था के भीतर 'समानता' का क्षणिक अनुभव है। महिलाएँ एक दिन के लिए पुरुषों की तरह देर रात बाहर जाकर 'लूट मचाती' हैं, जिससे सभी के बीच का अंतर मिट जाता है। यह लैंगिक भेदभाव को मिटाने का एक प्रतीकात्मक प्रयास है। पुरुषों का 'जेब कटता' है और 'बेइज्जती' होती है, जिससे वे पछताते हैं - एक सूक्ष्म संकेत कि पुरुष भी कभी-कभी अपनी पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर निकलने पर असहज महसूस कर सकते हैं। गीताश्री ने डोमकच के इस पारंपरिक खेल को नारी मुक्ति के एक छोटे से, लेकिन शक्तिशाली प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। वे दिखाती हैं कि कैसे सामाजिक दायरे के भीतर भी, महिलाएँ अपनी आज़ादी के लिए छोटे-छोटे रास्ते तलाश लेती हैं और अपनी कुंठाओं को अभिव्यक्त करती हैं।

इस खेल के दौरान महिलाओं द्वारा "विश्वसस्तरीय गालियों, अश्लील मजाकों, गाली गीतों से एक दूसरे को नवाज़ती"[5] जाने का वर्णन उनके मन के भड़ास निकालने का सशक्त माध्यम है। सामाजिक मान्यता है कि ऐसी बातें केवल पुरुष करते हैं, लेकिन यहाँ महिलाएँ उन वर्जित अनुभवों को जीती हैं। यह दिखाता है कि उन्हें भी दोस्तों के साथ घूमने, खुलकर बातें करने, और अपने अंदर की भावनाओं को व्यक्त करने की कितनी तलब होती है। "अश्लील

मज़ाक" करना, जो आमतौर पर महिलाओं के लिए 'मना' होता है, इस दौरान उन्हें छोटी-बड़ी का अंतर भुलाकर केवल 'आम औरत' बन जाने का अवसर देता है, जिसके अंदर भावनाएँ, बातें, भड़ास, दुख, दर्द और हर्ष सब कुछ है। यह सब प्रकट करने का अधिकार उन्हें सामान्य परिस्थितियों में नहीं होता।

कथावाचक द्वारा "हद होती है बेशर्मी की सब कुछ खोल कर रख दोगे क्या...? गीत गाओ सप्रसंग वर्णन तो बंद करो"[6] कहने पर भी महिलाओं का अपनी मस्ती में लीन रहना दर्शाता है कि वे इस आज़ादी को कितना महत्व देती हैं। यह अश्लील मजाक और लैंगिक चेष्टाओं का वर्णन कथावाचक को अजीब लगता है, शायद इसलिए कि उनके शहरी जीवन में ऐसी खुलकर बातचीत का अभाव है। यह ग्रामीण महिलाओं के लिए 'ईद का चाँद' जैसा है, जहाँ वे 'मर्द' की तरह बेफिक्र होकर जीने का अवसर पाती हैं। लेखिका गीताश्री अपनी कथावाचक के माध्यम से शहरी और ग्रामीण परिवेश के बीच के सांस्कृतिक और सामाजिक अंतरालों को भी उजागर करती हैं।

दैनिक जीवन में महिलाओं का दमन और 'मुक्ति' की चाह

शादी के अगले दिन, भले ही रात को कितनी भी आज़ादी मिली हो, सुबह होते ही महिलाएँ अपने पारंपरिक कामों में जुट जाती हैं। "सब औरतें मिलकर खाना बनाने का जो काम में लगी गई थी... शाम तक जो बाराती लौटेंगे उनके लिए खाने की तैयारी.."[7] यह उनके जीवन का एक कड़वा यथार्थ है कि स्वतंत्रता क्षणिक है, जबकि कर्तव्य और बंधन स्थायी हैं।

बड़की भाभी का कथन, "हम ना सुनेंगे किस्सा कोनो नया बात है का कितना मजा आ रहा है सबको चिरई के जान जाए लाइका के खिलौना!तुम लोग बहुत खुश हो रही हो रोज-रोज के काम से ऊबती नहीं हो का। रोज एक ही काम. हमारी उम्र हुई हमको मुक्ति चाहिए.."[8] हर ग्रामीण महिला की आवाज़ है। यह दिखाता है कि उम्र के ढलान पर भी उन्हें रोजमर्रा के कामों से आराम नहीं मिलता। वे स्वयं को "मर्दों का खिलौना" मानती हैं, जिसकी जान चली जाए तो भी किसी को फर्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि पुरुष किसी और को ढूंढ लेगा। यह कथन नारी के 'ऊब' और 'मुक्ति' की तीव्र इच्छा को व्यक्त करता है। भाभी की 'बेनाम ज़िंदगी' ("तब मुझे पता चला कि उनका नाम निशि है। कितना सुंदर नाम कभी किसी ने पुकारा नहीं था"[9]) इस बात का प्रतीक है कि विवाह के बाद एक औरत का वजूद केवल किसी की पत्नी, बहू या भाभी बनकर

रह जाता है, उसका अपना नाम, अपनी पहचान सब कुछ कुर्बान हो जाता है। गीताश्री ने भाभी के इस चरित्र के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं की आत्मिक पीड़ा और पहचान के संकट को अत्यंत मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। उनका यह कथन केवल भाभी की व्यक्तिगत भावना नहीं, बल्कि उन अनगिनत महिलाओं की सामूहिक वेदना है जिनकी पहचान उनके रिश्तों में खो जाती है। यह लेखिका की नारीवादी चेतना का परिचायक है।

आग और स्त्री: पीड़ा, शक्ति और तप का प्रतीक

बड़की भाभी का चेहरा चूल्हे के ताप से भभकना, उनका बार-बार फूकनी उठाकर आग को सुलगाना - ये सभी दृश्य 'आग' और 'स्त्री' के गहन प्रतीकात्मक संबंध को उजागर करते हैं। आग से प्रकाश, गर्मी और धुआँ उत्पन्न होता है, जो नारी के जीवन में तप, पीड़ा, दुख और शक्ति का प्रतीक बन जाता है। "आग और स्त्री का चेहरा कभी-कभी परस्पर जुड़े लगते हैं।"[10] यह पंक्ति नारी के उस शाश्वत नियति को दर्शाती है जहाँ उसे हर पल 'आग' से खेलते रहना पड़ता है।

नारी जन्म से ही पीड़ा को अपने साथ लेकर आती है, चाहे वह शारीरिक (जैसे ऋतुमति होना) हो या मानसिक (जैसे सामाजिक ताने)। "आखिर तू लड़की है" जैसे ताने उसकी मानसिक पीड़ा को बनाए रखते हैं। फिर भी, वह अपने अंदर 'शक्ति' बनाए रखती है - दिनभर काम करती है, पति को तृप्त करती है, और कभी थकने या रुकने की अनुमति नहीं पाती। ग्रामीण महिलाएँ हर वक्त घर के कामों में जुटी रहती हैं, उन्हें कभी मुक्ति नहीं मिलती। वे हर उन चीजों को जला देने की ताकत रखती हैं, फिर भी खुद धीमी पड़ जाती हैं, किसी के नियंत्रण में बंधी रहती हैं। यह उनकी आंतरिक शक्ति और बाहरी नियंत्रण के बीच का द्वंद्व है। जब वे ठान लेती हैं, तो पूरे संसार को जलाने की शक्ति रखती हैं, लेकिन वे ऐसा नहीं करतीं, बल्कि ज़रूरत के हिसाब से नियंत्रण में बनी रहती हैं। यह समानता उन्हें 'आग' के साथ जोड़ती है। गीताश्री द्वारा 'आग' और 'स्त्री' के बीच यह गहन प्रतीकात्मक संबंध स्थापित करना उनकी साहित्यिक प्रवीणता और नारी के जटिल अस्तित्व की गहरी समझ को दर्शाता है। वे केवल घटनाओं का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि उनके माध्यम से नारी की अंतर्निहित शक्ति और उसकी सतत अग्निपरीक्षा को भी अभिव्यक्त करती हैं।

पुरुष आतंक और पुरुष विहीनता का द्वंद

कहानी में पुरुष आतंक और पुरुष विहीनता का द्वंद्व कथावाचक और भाभी के संवादों से समझा जा सकता है। बड़की भाभी का सवाल, "आप अकेली कैसे रह पाई बउआ एकांत तो दुश्मन होता है औरत का,"[11] ग्रामीण समाज की उस सोच को दर्शाता है जहाँ अकेली औरत को अपूर्ण और असुरक्षित माना जाता है। समाज की दृष्टि में अकेली औरत के लिए सकारात्मक सोच बहुत कम ही मिलती है।

कथावाचक का जवाब, "मन हुआ अपना रेडीमेड जवाब सुना दो जो अक्सर में ऐसे सवाल पूछने वालों को बौखला कर देता हूं मुझे जिसको अपनी देह नहीं छूने देना था उसे तलाक दे दी जिसके साथ सोने का मन था वह मिला नहीं,"[13] एक आधुनिक नारी की यौनिक स्वायत्तता और विकल्पों को दर्शाता है। यह ग्रामीण महिलाओं के विपरीत है जहाँ अधिकांश को न चाहते हुए भी पति के साथ शारीरिक संबंध बनाने पड़ते हैं। बड़की भाभी का कहना "आप उन औरतों से भी बेहतर है जो एक ही आदमी का आतंक सारा जीवन झेलती है.."[14] यह कथन यौनिक संतुष्टि के अभाव को भी इंगित करता है, जहाँ 90% नारियाँ कभी यौन सुख का अनुभव नहीं करतीं - ग्रामीण परिवेश में यह संख्या और भी अधिक हो सकती है। कथावाचक का "बर्फ घर" में रहना उनके अकेलेपन और शारीरिक गर्माहट की कमी को दर्शाता है, जिसे उन्होंने स्वयं चुना है, लेकिन जिसका दर्द उन्हें तब महसूस होता है जब वह हमउम्र भाभी के यौनिक जीवन की बातें सुनती हैं। गीताश्री ने तलाकशुदा कथावाचक के माध्यम से आधुनिक शहरी नारी के अकेलेपन और इच्छाओं को भी स्वर दिया है। वे दिखाती हैं कि कैसे 'आजादी' भी अपने साथ एक अलग तरह का खालीपन ला सकती है, जो ग्रामीण महिलाओं के बंधनों से भिन्न है लेकिन उतना ही कष्टदायक हो सकता है। यह उनकी क्षमता है कि वे विभिन्न स्त्री अनुभवों को सहानुभूतिपूर्वक चित्रित करती हैं।

'नामर्दी की दवा' की मांग

कहानी का सबसे मर्मस्पर्शी और केंद्रीय बिंदु "नामर्दी की दवा" की मांग है। जब भाभी कहती हैं, "तेल ही फेंक दूं ना रहेगा तेल ना तलने की झंझट..."[15] "नामर्दी की दवा हमको भेज दीजिएगा... बहुत गिच्चन हो गया मेरी देह को अब आराम चाहिए,"[16] तो यह केवल तेल या पूरियों की बात नहीं है। तेल यहाँ पुरुषों की काम वासना का प्रतीक है, और पूरियां नारी हैं जो इस वासना को पूरी करती रहती हैं। भाभी अपने पति के साथ दैनिक बिस्तर के काम से

आज़ादी चाहती हैं, जिसे वह 'झंझट' मानती हैं। पति का आतंक और शारीरिक शोषण, जिसे वह 'बहुत गिच्चन हो गया' कहकर व्यक्त करती हैं, उनके भीतर और शारीरिक तौर पर वे जो महसूस करते हैं उसकी गहराई को सूचित करते हैं।

भाभी अपने पति से सीधे बात करने की हिम्मत नहीं कर पातीं, बल्कि उन्हें चुपचाप दवा खिलाने की बात करती हैं ताकि समाज और परिवार पर कोई असर न पड़े। यह उनकी चेतना और बंधनों में जकड़ी हुई प्रतिरोध की इच्छा को दर्शाता है। जब अन्य महिलाएँ भी "नामर्दी की दवा" की मांग करती हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि यह केवल एक नारी की कहानी नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत में अनगिनत महिलाओं के दैहिक आराम और मुक्ति की सामूहिक पुकार है। यह उन महिलाओं का प्रतीक है जो अपनी यौनिक स्वायत्तता और शारीरिक सीमाओं का सम्मान चाहती हैं, लेकिन सामाजिक दबावों के कारण खुलकर बोल नहीं पातीं। गीताश्री ने इस 'नामर्दी की दवा' के प्रतीक के माध्यम से नारी की यौनिक स्वायत्तता और प्रतिरोध की सूक्ष्म लेकिन सशक्त अभिव्यक्ति की है। यह उनकी कलात्मकता है कि वे एक सामान्य घरेलू संदर्भ से एक गहरी सामाजिक और यौनिक टिप्पणी निकालती हैं।

निष्कर्ष

यह कहानी पुरुष आतंक और पुरुष-विहीनता के द्वंद्व को मार्मिक रूप से प्रस्तुत करती है। नारी और नर एक-दूसरे के पूरक हैं, लेकिन जब वे एक-दूसरे का दर्द नहीं समझ पाते, तो जीवन "आतंक और झंझट" बन जाता है। भाभी मुक्ति चाहती हैं, लेकिन सामाजिक दबावों के कारण तलाक़ की हिम्मत नहीं जुटा पातीं। उनकी मुक्ति की तलब केवल अपने पति को 'नामर्दी की दवा' खिलाने तक सीमित रह जाती है, ताकि समाज और परिवार के ताने-बाने पर कोई असर न पड़े, और उनका काम भी हो जाए।

दूसरी ओर, कथावाचक, एक तलाकशुदा महिला, पुरुष-विहीनता का शिकार है। वह 40 की उम्र के बाद भी अपने अंदर एक साथी की कमी महसूस करती है। भाभी की बातों से प्रभावित होकर वह अपने जीवन के खालीपन की गहराई से महसूस करती है। उसका शरीर जो 'चाहता' है, वह उसे कभी मिला नहीं, और जिन्हें मिला, वे उससे ऊब चुके हैं।

कहानीकार ने 40 के बाद की नारी की शारीरिक और मानसिक अवस्था को गहराई से छूने का प्रयास किया है। नारी की खुशी न तो पुरुष-विहीनता में है और न ही ऐसे पुरुष में जो

हर वक्त अपनी इच्छाओं का बोझ उस पर डालता है। अंततः, यह विचारणीय है कि 40 के बाद नारी का शरीर भी कमज़ोर पड़ने लगता है, और वह 20-30 की उम्र की तरह जोश में काम नहीं कर पाती। यह कहानी नारी जीवन के हर उस पहलू को छूने की कोशिश करती है जहाँ उसे सामाजिक, शारीरिक और भावनात्मक संघर्षों से जूझना पड़ता है, और 'मुक्ति' की चाह उसके भीतर एक धीमी लौ की तरह जलती रहती है। संपूर्णतः, गीताश्री की यह कहानी नारीवादी विमर्श में एक महत्वपूर्ण योगदान है। वे न केवल ग्रामीण महिलाओं के जीवन की कठोर सच्चाइयों को उजागर करती हैं, बल्कि शहरी और ग्रामीण अनुभवों के बीच के सूक्ष्म अंतरों को भी दर्शाती हैं। उनकी लेखन शैली यथार्थवादी, संवेदनशील और गहरी मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि से परिपूर्ण है, जो पाठकों को नारी के जटिल संसार से परिचित कराती है और उन्हें इन मुद्दों पर सोचने पर मजबूर करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 7
2. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 7
3. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 8
4. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 8
5. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 8
6. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 9
7. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 10
8. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 13
9. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 13
10. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 13
11. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 13
12. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 13
13. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 13
14. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 14
15. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 14
16. गीताश्री, मन बसंत तन जेठ(2021), वनिका पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या: 14

शहनाज़ सी एच

शोध छात्रा, गवर्नमेंट ब्रेण्णन कॉलेज, तलश्शेरी
कन्नूर विश्वविद्यालय, कन्नूर, केरला
Email: shahanazch1993@gmail.com